कमलेश श्रीवास्तव

दोहें

फागुन फागुन खेलते, हवा धूप औ धूल ।
नन्ही गुड़िया ग्रीष्म की, चुने बसंती फूल ॥
फागुन की गगरी लिए, खड़ी बसंती नार ।
आंचल पीछे झांकता, रंगों का त्यौहार ॥
बौराई अमराइयां, फूले हुए पलाश ।
बगिया का कोमल बदन, फागुन के भुजपाश ॥
भरी अंजुरी फागुनी, झरते रंग अबीर ।
बरस रहे मन प्राण पर, कामदेव के तीर ॥
समझ स्वयं को आत्मा, बिसरा कर निज देह ।
शिवभक्तों ने पा लिया, परमपिता का नेह ॥
कई ढंग पूजाओं के, औ हैं धर्म अनेक ।
कोइ भी दें नाम उसे, सबका मालिक एक ॥
हिंदू मुस्लिम इसाई, सिक्ख पारसी जैन ।
एक प्रभु के नाम से, सबको मिलता चैन ॥
काजल होती आत्मा, जलता जीवन दीप ।
पुण्य क्षीण होने लगे, पापी हुए समीप ॥
जब से मन वन में हुआ, ज्ञान वाण संधान ।
सिंह मरा अज्ञान का, खिंची पुण्य मुस्कान ॥
आज तुम्हारे होंठ से, झरे शहद के फूल ।
पल भर में ही हो गईं, शंकाएं निर्मूल ॥
झूला झूले जलपरी, मन सागर के बीच ।
लहर उठाए प्रेम की, खुशियां रही उलीच ॥

पंख लगा के सुरमई, बादल हुए पतंग ।
तपते सूरज की कथा, हुई बीच में भंग ॥
लगा मुखौटे खेलते, बादल नभ के बीच ।
हिरण बनें हाथी बनें, बनते बंदर रीछ ॥
बूंदों की बारहखड़ी, बादल करते याद ।
रह रह नभ में गूंजता, वर्षा का संवाद ॥
नीले नभ में तैरते, चपल मेघ अविराम ।
नाम धरा के भेजते, बूंदों के पैग़ाम ॥
धुले धुले नभ मंच पर, मेघपरी का नाच ।
बूंदों के घुंघरू गिरे, बिजुरी करती जांच ॥
हवा झूमती पालने, मेघ बजाते ढोल ।
बैठ अषाढ़ी डाल पर, मौसम करे किलोल ॥
थाल सजा के मोतिया, वर्षा आई द्वार ।
मौसम अभिनंदन करे, हवा करे मनुहार ॥
बरखा उतरी गांव में, फैली सौंधी गंध ।
खेतों में उगने लगे, फसलों के अनुबंध ॥
फागुन उतरा आम पर, हवा हुई बिंदास ।
बगिया ने बदले वसन, झील किनारे प्यास ॥
फागुन थिरके बाग में, हवा निकाले पंख ।
मौसम ने फूंका कहीं, गरम समर का शंख ॥
मोरपंखिया मंजरी, हुई मोरनी डाल ।
फागुन के लब चूम के, आम हुए खुशहाल ॥

विदिशा, म.प्रदेश